[ISSN : 2348-2605]

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका

(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

www.gejournal.net

E-mail: hindires@gmail.com

अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान
शोध पत्रिका
(त्रैमासिक हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान पत्रिका)

कृषि उत्पादन में जोत आधारित उत्पादन एवं प्रोद्यौगिकी का तुलनात्मक अध्ययन
(भोपाल जिले के संदर्भ में)

डॉ0 पूजा कश्यप
सहायक प्राध्यापक
बरकतउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल

प्रस्तावना :– कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रधान व्यवसाय होने के साथ राष्ट्रीय आय एवं रोजगार एवं जीवनयापन का सबसे बड़ा स्रोत एवं प्रमुख साधन है तथा औद्योगिक विकास वाणिज्य एवं विदेशी व्यापार का आधार रहा हैं। यह भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ तथा विकास की कुंन्जी हैं। अल्प विकसित राष्ट्र जिनका प्रमुख व्यवसाय कृषि होने के कारण अपने सीमित साधनों द्वारा आर्थिक विकास की ऊंची दर तब तक प्राप्त नही कर सकते, जब तक कि वे आधारभूत कृषि उद्योग का विकास न कर लें। देश में बेकार अतिरिक्त श्रम शक्ति को रोजगार कृषि एवं सम्बंध उद्योगों में ही उपलब्ध हो सकता हैं। अतः देश की आर्थिक प्रगति एवं बेरोजगारी दूर करने हेतु कृषि के विकास का बड़ा महत्व हैं। यहॉ देश के आर्थिक विकास के लिये कृषि विकास पर अधिक ध्यान इसलिये भी दिया जाना महत्वपूर्ण होगा, क्योकिं कृषि क्षेत्र मे पूंजी उत्पाद अनुपात भी अधिक ऊँचा नही हैं।

कम पूंजी लगाकर कृषि क्षेत्र मे अधिक मात्रा में उत्पादन किया जा सकता हैं, जिसके फलस्वरूप कृषि विकास के लिए विदेशी मुद्रा की अतिरिक्त आवश्यकता नही होती जितनी कि औद्योगिक विकास के लिये होती है। यही कारण है कि योजनाकारों ने देश की प्रगति के लिये जो रूपरेखा तैयार की उसमे औद्योगिकरण के साथ साथ कृषि के विकास पर विशेष बल दिया हैं।

साहित्य सर्वेक्षण :– सैनी (1980) शोध में जोत का आकार एवं प्रक्षेत्र आकार धनात्मक रूप से संबंधित है। इससे इस बात को समर्थन मिलता है कि हरित क्रांति के पश्चात् छोटे तथा बड़े किसानों के बीच आय के मामले में और अधिक चौड़ी खाई बनी है।

सिंह, गुप्ता एवं सिंह (1992) ने पाया कि सीमान्त मूल्य उत्पादकता में मानवीय श्रम से गेहूँ के जोत पर प्रभाव डालता हैं। इन्होने यह भी निष्कर्ष निकाला कि छोटी जोत के फार्म पर अधिक मानवीय श्रम की आवश्यकता होती है और उससे तुलनात्मक दृष्टि से कम उत्पादकता होती है। बड़े फार्म पर मशीनी श्रम का अधिक का उपयोग तथा मानवीय श्रमिकों का कम उपयोग करने से सीमान्त मूल्य उत्पादकता तुलनात्मक दृष्टि से बढती है।

उद्देश्य :–

1. भोपाल जिले की कृषि उत्पादन की वर्तमान स्थिति का अध्ययन करना।
2. भोपाल जिले के कृषि उत्पादन में छोटे एवं बड़े किसानों की जोत आधारित उत्पादन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पना :–

1. छोटे एवं बड़े किसानों की जोत आधारित उत्पादन क्षमता में कृषि प्रौद्योगिकी में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।
2. छोटे एवं बड़े किसानों की जोत आधारित उत्पादकता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं।

सीमाएँ:–

1. भोपाल जिले को लिया गया हैं।
2. भोपाल जिले के 4–5 गांवो का चुनाव किया गया हैं।

शोध विधि :–

न्यादर्श :– भोपाल जिले के विभिन्न आकार के गांवों में से नगर दूरी के आधार पर 5 गॉवों का चयन किया गया है और उनमें विभिन्न छोटे एव बड़े जोत वाले किसानों को यादृच्छिक विधि द्वारा चुना गया है।

उपकरण :– शोधकर्ता द्वारा स्वयं निर्मित प्रश्नावली का निर्माण किया गया । प्राथमिक आंकड़ों का संकलन एक प्रश्नावली के माध्यम से किया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकी :– प्रस्तुत शोध कार्य में मूल आंकड़ो का विश्लेषण करने हेतु माध्यमान, मानक विचलन तथा क्रांतिक अनुपात निकाला गया है।

तालिका –1

छोटे एवं बड़े किसानों की जोत आधारित उत्पादन क्षमता में कृषि प्रौद्योगिकी की तुलना

किसानों के वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता स्तर 00.5
छोटे किसान	100	170.3	27.42	1.74	सार्थक अंतर हैं
बड़े किसान	100	177	27.23		

विश्लेषणः– तालिका 1 में छोटे एवं बड़े किसानों की जोतों के अनुसार उत्पादन क्षमता में कृषि प्रौद्योगिकी तुलना की गई हैं। जिसमें छोटे किसानों का मध्यमान 170.3 तथा बड़े किसानों का मध्यमान 177 पाया गया, मानक विचलन की गणना करने पर छोटे किसानों का मानक विचलन 27.42 तथा बड़े किसानों का मानक विचलन 27.23 पाया गया। दोनों समूहों के किसानों के उत्पादन का क्रांतिक अनुपात 1.74 हैं। 198 स्वतंत्रता अंश पर 0.05 स्तर का मान 1.97 आया हैं। गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात 1.74 आया हैं। जो सारणी मान से अधिक हैं। अतः प्रतिपादित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

तालिका –2

बड़े एवं छोटे किसानों की जोतों की उत्पादन क्षमता की तुलना

किसानों के वर्ग	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रांतिक अनुपात मान	सार्थकता स्तर 00.5
छोटे किसान	100	26.70	7.23	2.25	सार्थक अंतर हैं
बड़े किसान	100	28.07	5.88		

विश्लेषणः– तालिका 2 में छोटे एवं बड़े किसानों की जोतों के अनुसार उत्पादन क्षमता की तुलना की गई हैं। जिसमें छोटे किसानों का मध्यमान 26.70 तथा बड़े किसानों का मध्यमान 28.07 पाया गया , मानक विचलन की गणना करने पर छोटे किसानों का मानक विचलन 7. 23 तथा बड़े किसानों का मानक विचलन 5.98 पाया गया। दोनों समूहों के किसानों के उत्पादन का क्रांतिक अनुपात 2.25 हैं। 198 स्वतंत्रता अंश पर 0.05 स्तर का मान 1.97 आया हैं। गणना द्वारा प्राप्त क्रांतिक अनुपात 2.25 आया हैं। जो सारणी मान से अधिक हैं। अतः प्रतिपादित परिकल्पना अस्वीकृत की जाती हैं।

निष्कर्षः– शोध पत्र के निष्कर्ष में यह कहा जा सकता हैं, भोपाल जिले के छोटे एवं बड़े किसानों की जोत आधारित स्थिति बहुत महत्तवपूर्ण मानी गई है। जिसमें कृषि उत्पादकता को बढ़ाने में बड़े किसानों द्वारा प्रौद्योगिकी का बेहतर उपयोग किया जा रहा हैं। वही छोटे किसानों द्वारा प्रौद्योगिकी का कम उपयोग किया जा रहा हैं। जिससे उत्पादकता प्रभावित होती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. म.प्र. का सांख्यिकी संक्षेप, आर्थिक एवं सांख्यिकी संचालनालय, मध्यप्रदेश।

2. कुमार, प्रमीला : एग्रिकल्चरल चेन्ज इन अरबन फ्रिन्ज, राजेश पब्लिकेशन्स, दिल्ली ।

3. Abraham T.P. & Raheja S.P. and Anaya's of growth of medication of rice and wheat crops in India. Indian Journal of Agriculture at Bionomics .